f'k{kk e dykvk dh mi;kfxrk

Mk0 eg'k dekj
एसो0प्रो0 चित्रकला विभाग, जे0वी0 जैन कॉलिज, सहारनपुर, उ0प्र0, भारत

आज के वैज्ञानिक, प्रयोगशील एवं तीव्र प्रगतिगामी युग में प्रत्येक समाज में कलाओं की उपयोगिता बढ़ गई हैं। बढ़ते भौतिक वाद एवं उपभोक्तावाद के कारण व्यक्ति के परिवार व समाज के साथ विखण्डित सम्बन्धों में संतुलन बनाये रखने हेतु विज्ञान व तकनीकि शिक्षा के साथ कलाओं के शिक्षण की महती आवश्यकता है, ताकि सामाजिक ताने–बाने को स्वस्थ व मजबूत बनाये रखने हेतु समाज में मानव के सौन्दर्य बोध, संवेदनाओं, नैतिक व आध्यात्मिक तथा सकारात्मक, रचनात्मक शक्तियों को विकसित किया जा सके। अब जबकि एन0सी0टी0ई0 ने कला (कला, साहित्य, संगीत) का शिक्षण शिक्षक शिक्षा में भी अनिवार्य कर दिया हैं तथा प्रायः सभी शिक्षा बोर्डों ने दसवीं स्तर तक की शिक्षा में कला विषय की शिक्षा को बहुत पहले ही अनिवार्य घोषित कर दिया था। शिक्षा शास्त्रियों, नीति नियंताओं एवं बुद्धजीवियों ने यह बात अच्छी तरह समझ ली हैं कि समाज को समग्र शिक्षा प्रदान करने एवं शिक्षार्थी का सर्वागीण विकास करने एवं शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कला, साहित्य एवं संगीत का शिक्षण भी आवश्यक है। किसी विषय को समझाने, लिखने, व्यक्त करने में सुन्दर, सार्थक, आकर्षक व रूचिकर शब्दों, विचारों व उदाहरणों का चयन व संयोजन भी कला के अन्तर्गत आता हैं।

शिक्षा का लक्ष्य मनुष्य को ज्ञानवान बनाना ही नहीं हैं अपितु उसे सामाजिक उत्तरदायित्व को वहन करने योग्य बनाना भी है। जिस समाज में मनुष्य अपना जीवन व्यतीत करता है, उससे वह बहुत कुछ ग्रहण करना है और अनेक रूपों में वह उसका प्रतिदान भी देता है। जितना अधिक वह समाज के विकास व निर्माण में अपना योगदान देता हैं, उसे उतना ही श्रेष्ठ माना जाता है। ऐसा तभी सम्भव है कि जब व्यक्ति व समाज में संगतिपूर्ण सम्बन्ध हो। इस प्रकार के सम्बन्ध के लिए स्वस्थ मानसिक अवस्था अपेक्षित होती है। मानसिक स्वास्थ्य व्यक्तित्व के विखण्डन में न होकर समग्रता में निहित है। इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का इस प्रकार विकास करना है, जिससे व्यक्तित्व खण्डित होने से बचे और समज व व्यक्ति के संगतिपूर्ण सम्बन्ध विकसित हो सके। हर्ब रीड ने अपने ग्रंथ Education Through Art में लिखा है – Good may be identified, if we like. With tendencies that make for the organic unity of human associations, and evil, with the tendencies that destroy such unity"1

सम्पूर्ण जीवन एवं सभ्यता व संस्कृति के विकास में कलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है, तो शिक्षा के संदर्भ में कलाओं की भूमिका को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता। डॉ0 हरद्वारी लाल शर्मा लिखते हैं – "सामन्यतया, हम कला को मनोविनोद का साधन मानते हैं, ... यद्यपि मनोविनोद भी मामूली बात नहीं। तथापि हमारा विचार हैं कला मनो निर्माण–मन का निर्माण भी करती है। सृजन इसका सार हैं, और सृजन का सर्वस्व हैं नेतन चेतना का आविर्भाव, नये आयाम और स्फूर्ति का उदय। इसी से संस्कृति की सारी सम्पदाओं और सभ्यता के सारे सम्भार का विकास और विस्तार होता हैं।"2 कला सभ्यता और संस्कृति की बहुआयामी घटना है। इससे धर्म को संगीत का मिठास मिला, इसने भाषा को भावों से भरा, पत्थर व काष्ठ जैसी कठोर वस्तुओं को तराशकर उन्हें जीवन दिया, पैरों को नृतय की थिरकन और कण्ठ को संगीत का सम्मोहन, रेखा और रंगों को बोल उठने की सामर्थ्य दी और सबसे बढ़कर कला ने मनुष्य के लिए जीवन को जीने योग्य बनाया, ताकि वह निरन्तर नवीन का निर्माण करता रहे और सौन्दर्य, रूप की चारूता, रोचकता, कान्ति लावण्य से अपने जगत को समृद्ध बनाता रहे। जीवन व समाज मं सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की धारणा भी कला की देन है। समाज व जीवन को इतना सब देने वाली कला शिक्षा के लिए भी सदैव उपयोगी तथा शिक्षा को मूल्य प्रदान करने वाली रही है।

किसी विशेष वस्तु तक सीमित रहने पर हमारी मान्यताएं व विचार भी संकुचित रहते हैं। पदार्थों के विस्तृत ज्ञान से हमारे व्यक्तित्व का प्रसार होता हैं और हमारी सौन्दर्यदृष्टि विकसित होती है। शिक्षा की कलात्मक पद्धति पदार्थों को देखने हेतु हमें एक दृष्टि प्रदान करती हैं। वैज्ञानिक पद्धति से प्राप्त ज्ञान भी इससे भिन्न नहीं होता क्योंकि विज्ञान भी वस्तुओं का विश्लेषण करके सामान्य नियमों का प्रतिपादन करता है। किन्तु उन नियमों के आधार पर विज्ञान आदर्श स्थिति को प्रस्तुत नहीं कर पाता। विज्ञान केवल विश्लेषण करके छोड़ देता है। उसके आधार पर रूपों व आदर्शों का निर्माण करना कला के क्षेत्र में आता है। इस प्रकार विज्ञान जिस सत्य की व्याख्या करता है, कला उसे दृश्य रूप प्रदान करती है। सर हरबट रीड लिखते हैं, "Art is the representation, science the explanation – of the reality"3 इस प्रकार प्रत्यक्ष का ज्ञान और आदर्श की कल्पना जब व्यक्त होते हैं तो कला कहलाते हैं। यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने भी किसी भाव या विचार का आदर्श और समभाव्य रूप प्रस्तुत करना कला का प्रमुख कार्य बताया है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति जो भी कार्य करता है, उसे आदर्श रूप में करने से ही वह समाज हेतु अधिक उपयोगी हो सकता है। शिक्षा का लक्ष्य भी यही है कि प्रत्येक सामाजिक अपना कार्य अधिकाधिक कुशलता से कर सके तथा समाज में आदर्श नागरिक सिद्ध हो। इस प्रक्रिया में कला अपने आप आ जाती है। कला का उद्देश्य भी इसी बात में निहित है कि वस्तुओं, विचारों, भावों व सिद्धान्तों का सुन्दर रूप में निर्माण किया जाये, जिससे वे अधिक आकर्षक, प्रसन्नता–दायक और उपयोगी बन सके तथा समाज में सभी परस्पर संगीतपूर्ण सम्बन्ध रखे। रूसी विद्धान टालस्टाय का कला दर्शन इसी तथ्य पर आधारित हैं, जो मानव प्रेम एवं परस्पर भाईचारे (विश्वबन्धुत्व) को कला का सर्वोच्च लक्ष्य मानता हैं और यही उसका सौन्दर्यपक्ष भी हैं।

प्रकृति में जो रूप दिखाई देते हैं, वे रंगों के विभिन्न धरातलों के रूप में ही होते हैं। इस प्रकार रूप से भी आधिक रंग का महत्व हैं रंग हमारी इन्द्रियों को तेजी से प्रभावित करते हैं। दृश्यकला में रंग वस्तुओं और भाव दोनों की प्रकट करते हैं तथा मन को आनन्दित करते हैं। हम इस जगत में जो ज्ञान और अनुभव प्राप्त करते हैं, वह प्रमुखतः रूपों या रंगों के बिम्बों के माध्यम से प्राप्त करते हैं। यह रंग, रूप और बिम्ब कलाओं का आधार होते हैं। हम विचारों व सिद्धान्तों को भी प्रायः बिम्बों के रूप में ही आत्मसात करते हैं। छोटे बच्चे सब कुछ चित्रों व बिम्बों के रूप में ही ग्रहण करते हैं और इन्हीं के माध्यम से वे बाहरी दुनिया की सारी वस्तुओं को पहचानते हैं। बच्चों के बिम्ब धकृतिक जगत के रूपों के अधिक निकट होते हैं। आयु के साथ–साथ वे रूप प्रकृति से दूर और अवास्तविक होते चले जाते हैं। इसका प्रमुख कारण हैं आयु बढ़ने के साथ हमारे व्यक्तित्व में दरारें और अंतर्विरोध आ जाते हैं। कलाएं इन अंतर्विरोध में संतुलन पैदा करती हैं और दरारों को भरती हैं तथा इन विरूपताओं को कम करके व्यक्तित्व को ऊपर उठने में सहायता करती हैं। हमें ऊर्जा और सामर्थ्य प्रदान करती हैं। वस्तु जगत का ज्ञान स्मृति–बिम्बों के रूप में संग्रहीत होता रहता है। इन्हीं की मदद से हम वस्तु के प्रत्यक्ष रूप से मिलान करके पहचानते हैं। कलाओं के द्वारा जो वस्तुओं, विचारों व भावों के आदर्श–बिम्ब प्रस्तुत किये जाते हैं। इनके द्वारा हमारे स्मृति बिम्बों का परिस्कार और शोधन होता है। फलतः हमारे विचार, धारणाओं व भावों का शुद्धीकरण हेाता है। अरस्तु ने इसी अवधारणा पर आधारित "विरेचन का सिद्धान्त" (Theory of Catharsis) दिया था। इसीलिए शिक्षा में कलाओं, विशेषकर चित्रकला की विशेष उपयोगिता है।

प्राथमिक एवं माध्यमिक अथवा स्नातक स्तर पर पढ़ाये जाने वाले सभी विषयों का उद्देश्य मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास है। अर्थात् सभी विषय मिलकर समग्र ज्ञान के द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व का समग्र विकास करते हैं। किन्तु प्रत्येक विषय केवल अपनी बात कहता हैं, अन्य विषयों से उसका तालमेल नहीं दिखाई देता। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के समग्र विकास की बात बेमानी है। स्नातक स्तर पर एक ही संकाय के अन्य विषयों के बारे में विद्यार्थी कुछ नहीं जानते। कोर्स में एक यूनिट विभिन्न विषयों के अंतसम्बन्ध पर आधारित होनी चाहिए–ऐसी आवश्यकता अवश्य महसूस होती है। चित्रकला विषय सभी विषयों में ऐसा हैं जो विभिन्न विषयों के अंतर्सम्बन्ध की कमी को आंशिक रूप से पूरी करता है। इतिहास में महान व्यक्तियों, घटनाओं आदि के चित्र राजनीति विषय, साहित्य व भाषा में विभिन्न व्यक्तियों व स्थानों के चित्र होते हैं। इन चित्रों से हम उन व्यक्तियों के व्यक्तित्व के गुणों को आत्मसात करते हैं। अन्य विषयों में भी किसी न किसी रूप में चित्रकला का उपयोग होता है, जिससे विषय को समझने में सहायता मिलती है। किन्तु यह विषयों के अंतर्सबन्ध का एक पक्ष है। किसी भी देश अथवा काल की शिक्षा में मानव–मूल्य सर्वोपरि होते हैं अथवा होने चाहिए। यदि मूल्य विकास नही हो रहा है तो, वह शिक्षा व्यर्थ है। हम तकनीकी व विज्ञान आदि की शिक्षा देकर हम उनमें मानव मूल्यों का विकास नहीं कर पाते, तो परिणाम वही होता है जो आज प्रायः व्यवसायी वर्ग एवं अपने क्षेत्र में विशेषज्ञों के विषय में सुना और देखा जाता है। जीवन के मूल्यों को बनाये रखने, नवीन परिस्थतियों के अनुकूल नवीन मूल्य बनाने, पुराने मूल्यों में आवश्यकतानुरूप बदलाव –मनुष्यों में यह सब विकसित करने और प्रेरणा देने हेतु साहित्य, कलाएं औरं संगीत अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुए हैं। विश्व के इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिल जायेंगे जहां कला, साहित्य व गीत–संगीत ने बड़े–बड़े परिवर्तनों और क्रान्तियों में अपनी उपयोगिता सिद्ध की है। पुराने समय में युद्ध मैदान में सेना का मनोबल बढ़ाने के लिए वीर रस के गीत रचने व गाने वाले भी होते थे। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में बहुत से कवियों, शायरों, नाटककारों, संगीतकारों, फिल्मकारों, चित्रकारों व मूर्तिकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। रविन्द्रनाथ टैगोर, इकबाल, नन्दलाल बोस,

बंकिमचन्द्र मैथिलीशरण गुप्त आदि के नाम अविस्मरणीय हैं। डॉ0 हरद्वारी लाल शर्मा ने लिखा है – "दर्शन महान विचार होता हैं .... कला महान विचारों को अत्मसात करके उनका अपने माध्यम से प्रस्तुतीकरण करती हैं ओर वे महान विचार कलात्मक प्रस्तुतीकरण से प्रत्यक्ष, प्रबल प्रेरणा की शक्तियों बन उठते हैं। प्रत्येक विश्वक्रान्ति के पीछे न केवल महान विचारक होते हैं, अपितु महान कलाकार भी रहते हैं।"4

शिक्षा का प्रश्न राष्ट्रीय प्रश्न हैं। सेना, स्वास्थय, परिवहन, आंतरिक सुरक्षा, कृषि उद्योग आदि के समान ही इसका महत्व हैं, शिक्षा के द्वारा अच्छे नागरिक का निर्माण होता हैं। इस कार्य में वर्तमान शिक्षा कहीं पिछड़ रही हैं। यही कारण हैं कि आज देश भर में अनेक समस्याएं हैं, विकास के स्थान पर नितान्त गैर जरूरी मामले राष्ट्रीय मुद्दा बनते है। दोनों बातें सही नहीं हो सकती, या तो एक बात सही है अथवा दूसरी। कौन सी बात सही हैं हमारी शिक्षा प्रणाली हमें यह समझाने में असमर्थ हैं कि कौन सी बात सही हैं। अच्छे एवं जिम्मेदार नागरिकों का निर्माण समस्त कार्यों से अधिक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यदि नागरिकों के संस्कार अच्छे नहीं होंगे तो सभी प्रयास सभी योजनाएं निरर्थक हैं। नागरिकों में इस प्रकार के मूल्य निर्माण में कलाएं उपयोगी सिद्ध होती हैं। कलाएं हमारी भावनाओं, विचारों एवं सोच का शोधन करती हैं। पुराने अच्छे मूल्यों का संरक्षण एवं उनका नयी पीढ़ी में हस्तान्तरण करती हैं। देश–कालानुरूप मूल्यों एवं संस्कारों में परिवर्तन एवं नवीन मूल्य निर्माण में कलाएं अपना महत्वपूर्ण योग देती हैं। कलाएं देश की संस्कृति की संवाहक एवं संरक्षक होती हैं। कलाएं राष्ट्रीय समृद्धि की प्रतीक मानी जाती हैं। कलाएं क्षुद्र जातीय, प्रान्तीय, भाषायी, धार्मिक घेरों से निकालकर व्यक्ति को मानवता के श्रेष्ठ धरातल पर प्रतिष्ठित करती हैं तथा एक आदर्श समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करती है – सम्भवतः यही शिक्षा का श्रेष्ठ लक्ष्य हैं। शिक्षा में कला के महत्व को रेखांकित करते हुए आचार्य नन्दलाल बसु ने लिखा है – "सौन्दर्य बोध के अभाव में मनुष्य केवल रस से वंचित होता हो, सो नहीं, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की ओर से भी क्षतिग्रस्त होता है। सौन्दर्य ज्ञान के अभाव में जो व्यक्ति आंगन और घर में कूड़ा–कर्कट जमा रखता है, अपने शरीर और लिबास का मैल साफ नहीं करता, घर की दीवार पर, राह–घाट गली–कूचे में, अथवा रेलगाड़ी पर पान की पीक और थूक फेंकता है, वह सिर्फ अपने ही स्वास्थ्य का नहीं, समस्त जाति के स्वास्थय की हानि करता है।"5

lnHk lph&

1. Herbert Read, Education through Art, pp. 3.
2. डॉ0 हरद्वारी लाल शर्मा, कला दर्शन, पे0 – 7
3. Herbert Read, Education through Art, pp. 11.
4. कला मनोविज्ञान, पृ0 – 18
5. नन्दलाल बसु, कला त्रैमासिक अंक जु0 सित0 2002, पे0 – 5